ॐ

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला चतुर्दश पुष्प

# वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका

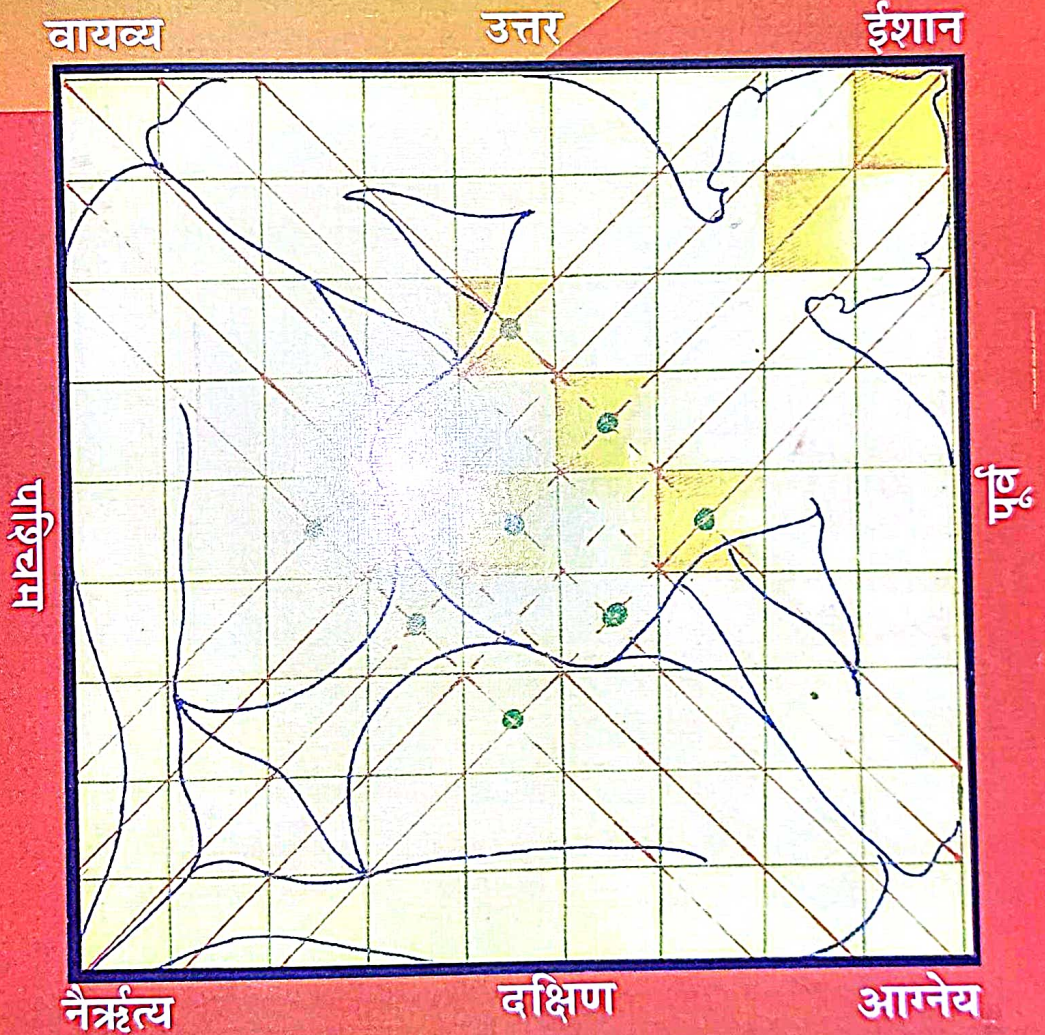


श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
( केन्द्रीयविश्वविद्यालयः )
नवदेहली-110016

प्रकाशक -
**वास्तुशास्त्र विभाग**
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नव देहली-110016
**ISSN :- 0976-4321**

© प्रकाशक

संस्करण - 2021
मुद्रण वर्ष - 2023

मूल्य 200/-

प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इस ग्रन्थ के किसी भी अंश का अनुवाद या किसी भी रूप में उपयोग करना सर्वथा वर्जित है।

मुद्रक:
**गणेश प्रिंटिग प्रेस**
दिल्ली-110016
फोन : 9811663391/93

| | | | |
|---|---|---|---|
| 20. | शुक्रनीति में देवप्रतिमानिर्माण निर्देश | **डॉ. विशाल भारद्वाज**<br>सहायकाचार्य, संस्कृतविभाग<br>गुरुनानक देव विश्वविद्यालय,<br>अमृतसर | 169 |
| 21. | स्थापत्यकला के अन्तर्गत वास्तुबोध | **डॉ. सुमनलता शर्मा**<br>सहायकाचार्या - संस्कृतविभाग<br>श्री बा. बालकनाथ महाविद्यालय,<br>चकमोह, हमीरपुर | 176 |
| 22. | जैनदर्शन वाङ्मय में वास्तुविद्या | **डॉ. रविन्द्र उनियाल**<br>सहा. अध्यापक-वास्तुज्योतिषविभाग<br>केन्द्रीय संस्कृत वि.वि. भोपाल परिसर,<br>**डॉ योगेन्द्र शर्मा**<br>सहायकाचार्य - वास्तुशास्त्रविभाग<br>श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत-<br>विश्वविद्यालय, नवदेहली | 180 |
| 23. | विष्णुमूर्ति का विधान विमर्श | **डॉ. रितिका अग्रवाल जैन**<br>पूर्व शोधच्छात्रा वास्तुशास्त्र विभाग<br>श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत<br>विश्वविद्यालय, नई दिल्ली | 187 |

# जैनदर्शन-वाङ्मय में वास्तुविद्या

डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल
डॉ. योगेन्द्र कुमार शर्मा

**प्रस्तावना**

भारतीय साहित्य का स्थान विश्वसाहित्य में सर्वोत्कृष्ट और व्यापक है। इसकी प्रामाणिकता और प्राचीनता सर्वमान्य है। भारतीय साहित्य की सर्वोत्कृष्टता और व्यापकता का प्रमाण इसकी विविध साहित्यिक सम्पदा स्वरूप शाखाओं जैसे हिन्दू, बौध, जैन आदि से सुस्पष्ट है। इन शाखाओं में जैन साहित्यिक परम्परा का अपना स्थान है। जहाँ दर्शन साहित्य, व्याकरण, गणित, ज्योतिष, वास्तु, शिक्षा, योग, आदि विविध शास्त्रों के ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। इनमें वास्तुशास्त्र का अपना विशिष्ट स्थान है। वर्तमान में वास्तुविद्या का महत्त्व और उपियोगिता इस बात से स्पष्ट ही है कि ब्रह्मा के द्वारा चारों वेदों में अथर्ववेद के उपवेद को स्थापत्य वेद के रूप में स्थापित किया गया। जो सर्वविदित है। जैन वाङ्मय का अध्ययन करने से पता चलता है कि जैन साहित्य में भी वास्तुविद्या के विषय पर्याप्त रूप में वर्णित हैं। जैन परम्परा में प्राचीन काल से ही मन्दिर तथा भवनों का निर्माण वास्तुशास्त्र के अनुसार ही होता आया है। श्रवणवेलगोला, खजुराहो, पालीताना, रणकपुर, आदि हजारों मंदिरों में वैज्ञानिक रीति से वास्तु का प्रयोग विश्व को अचम्भित कर देने वाला है। जैनधर्म में भगवान् ऋषभदेव को ही वास्तुविद्या का प्रथम उपदेष्टा माना जाता है।[1] जिन्हें आदिनाथ, आदिब्रह्मा, प्रजापति, वृषभ, पुरुदेव, आदिसूनु और बृहद्देव आदि नामों से भी जाना जाता है। इन्होंने ही युगारम्भ में प्रजा को कृषि, वाणिज्य, वास्तु-शिल्प आदि विभिन्न कर्मों की शिक्षा दी थी।

प्रस्तुत लेख के माध्यम से जैन वाङ्मय में वास्तुविद्या एक आयाम है। साथ ही जैन धर्म में वास्तुशास्त्र का स्वरूप का क्या है? जैन साहित्य में वास्तुकला और उसकी ग्रन्थ सम्पदा, वास्तु की आचार्य परम्परा, जैन प्रतिमाओं के निर्माण का विज्ञान आदि विषयों का प्रतिपादन किया गया है।

वास्तु शब्द 'वस्' धातु से निवास अर्थ में व्युत्पन्न हुआ है तथा यह निवास योग्य भूखण्ड तथा गृह का बोधक है।[2] वेदों में सुवास्तु गृह के अर्थ में[3] और अवास्तु गृहाभाव[4]

1. वास्तुशास्त्रविमर्श, पञ्चम पुष्प, पृ. सं. 34
2. वाचस्पत्यम्- भाग-6, पृ. सं. - 888, हलायुध - पृ. सं. - 606, अमरकोश - 2.2.19
3. ऋग्वेद - 8,19,35
4. अथर्ववेद -12,7,7

ॐ

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला – पंचदश पुष्प

# वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका

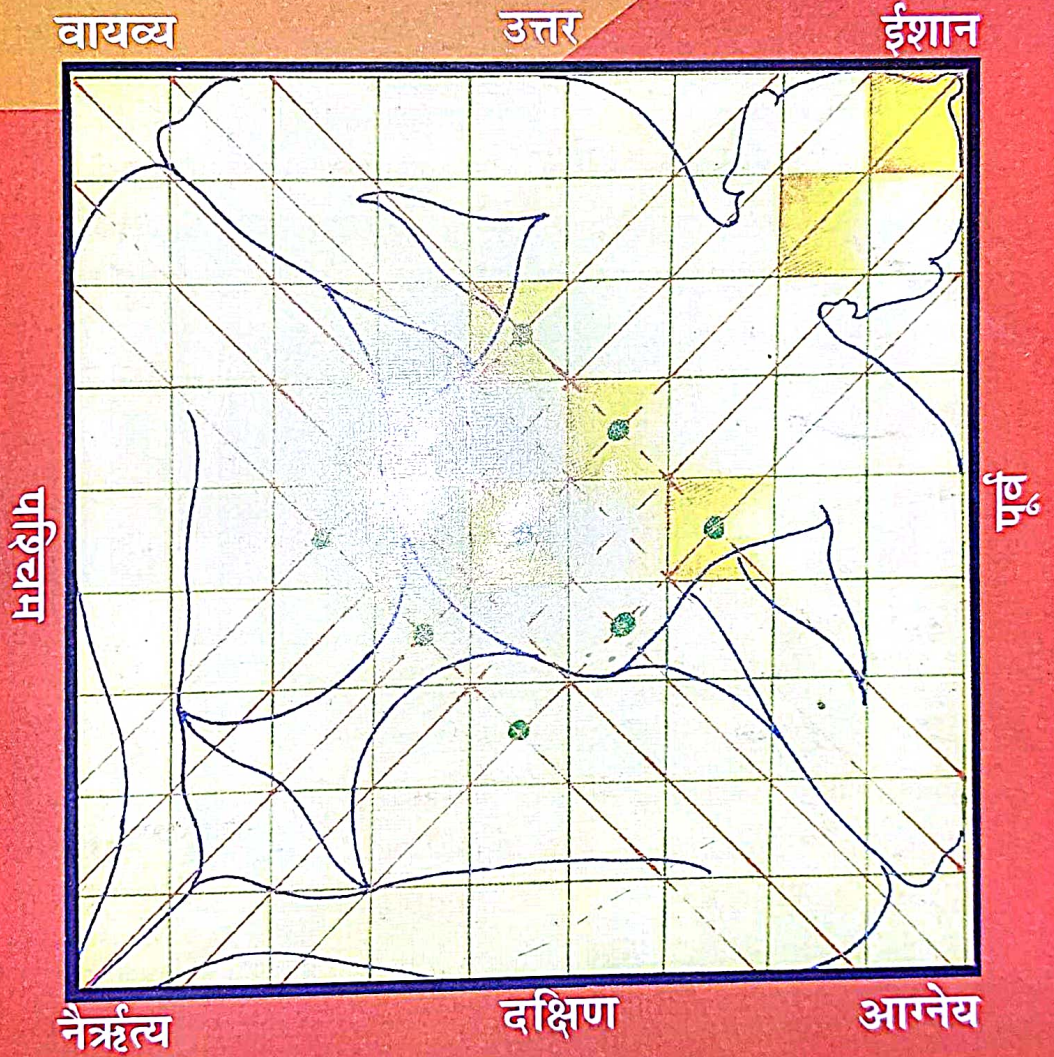


श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
( केन्द्रीयविश्वविद्यालयः )
नवदेहली-110016

प्रकाशक -
**वास्तुशास्त्र विभाग**
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नव देहली-110016
**ISSN :- 0976-4321**

© प्रकाशक

संस्करण - 2022
मुद्रण वर्ष - 2023

मूल्य 200/-

प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इस ग्रन्थ के किसी भी अंश का अनुवाद या किसी भी रूप में उपयोग करना सर्वथा वर्जित है। शोधलेखों में लेखकों के स्वयं के विचार हैं। शोधलेख में किसी भी प्रकार का विवाद होने पर शोधलेखक स्वयं उत्तरदायी रहेगा।

मुद्रक:
**गणेश प्रिंटिग प्रेस**
दिल्ली-110016
फोन : 9811663391/93

| | | | |
|---|---|---|---|
| 14 | वास्तुशास्त्र में देश तत्त्वविमर्श | **डॉ. योगेन्द्र कुमार शर्मा**<br>सहायक-आचार्य, वास्तुशास्त्रविभाग<br>श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)<br>नई दिल्ली 110016 | 133 |
| 15 | वास्तुशास्त्रानुसार जीर्णोद्धार फलप्राप्ति | **डॉ. दीपक वशिष्ठ**<br>सहायक-आचार्य वास्तुशास्त्रविभाग<br>**जीवन जोशी**, शोधार्थी, वास्तुशास्त्र विभाग<br>श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय, नई दिल्ली | 148 |
| 16 | वास्तुशास्त्रोक्त जलव्यवस्था में कूपचक्र की अवधारणा | **डॉ. मृत्युञ्जय कुमार तिवारी**<br>सहायक आचार्य, ज्योतिष विभाग<br>श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय, निम्बाहेडा (राज.) | 153 |
| 17 | वास्तुशास्त्रोक्त स्थपतिलक्षण | **डॉ. मनीष शर्मा, सहायक**<br>आचार्य (ज्योतिषविभाग)<br>श्रीकल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय<br>निम्बाहेडा चित्तौडगढ़ | 158 |
| 18 | वास्तुशास्त्र में देवालय एवं प्रतिमाविज्ञान | **यश शर्मा**<br>सहायक प्राध्यापक<br>शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, उज्जैन | 166 |
| 19 | पुराणों में वर्णित वास्तुविद्या का स्वरूपविमर्श | **डॉ. अंबुज त्रिवेदी**<br>सहायक प्राचार्य, ज्योतिष विभाग<br>ब्रज भूषण संस्कृत महाविद्यालय, गया, बिहार | 170 |
| 20 | गृहप्रवेश मुहूर्त विचार | **डॉ. अश्वनी कुमार**<br>राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय तिरुपति | 181 |
| 21 | Major Parts of Temple Architecture | **Dr. Avyaqt Raina**<br>Guest Facuty Vastushastra dept.<br>SLBSNS University, New Delhi | 184 |

# वास्तुशास्त्र में देश तत्त्वविमर्श

डॉ. योगेन्द्र कुमार शर्मा

वस्तुतः हम सब जानते हैं कि देश अथवा स्थान के बिना हम दिक् और काल का ज्ञान ही नहीं कर सकते हैं। अर्थात हम कह सकते हैं कि दिक् और काल का आधार देश ही है। देश के भेद से काल में भी भेद उत्पन्न हो जाता है। अतः भारतीय वास्तुशास्त्र की समृद्ध परम्परा में इन दिग्, देश और काल तीनों का समग्र चिन्तन किया जाता है जिस में देश का स्थान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि देश से ही निर्माण प्रक्रिया का शुभारम्भ होता है। अतः वास्तुशास्त्रानुसार सर्वप्रथम स्थान (देश) चयन के उपरान्त दिक् के शुभाशुभत्व का विचार किया जाता है। अतः शास्त्रानुसार देश और काल की शुद्धता के आधार पर ही वास्तु का विधान होना चाहिए। वास्तु के ग्रन्थों में दिक्-देश आदि विषयों पर विस्तार से वर्णन उपलब्ध है। सामान्यतया देश का सम्बन्ध क्षेत्र विशेष अथवा स्थान विशेष से है जिसमें वास्तु निर्माण किया जाना है। काल का सम्बन्ध समय (टाइम) से है। क्षेत्र अथवा देश का निर्धारण अक्षांश व देशान्तर के आधार पर होता है। प्रकृति जनपद एवं जलवायु को दृष्टि में रखकर देश- भूमि चयन किया जाता है। राजधानी स्थान निवेश के सम्बन्ध में आचार्य शुक्र कहते हैं कि 'अपनी राजधानी राजा ऐसी जगहा बनावे जहाँ नाना प्रकार के वृक्ष और लता हों और पशु और पक्षीयों के गण से युक्त देश हो और जिसमें काष्ठ और तृण का सुख हो और समुद्रपर्यन्त नाव के गमन का जहां अनुकूल हो और जहाँ पर्वत समीप हो रमणीक और समभूमि हो जहाँ हो'[1]। शुक्राचार्य के इन वचनों के सदृश वास्तुशास्त्र के विभिन्न आचार्यों ने भी स्थान चयन के सम्बन्ध अपने अभिमत प्रस्तुत किए हैं। इसी प्रकार प्रस्तुत लेख में हम देश अथवा भूमि चयन की अवधारणा को विस्तृत रूप से समझने का प्रयास करेंगे।

**देश की अवधारणा -**

वास्तु के प्रसिद्ध आचार्य वराहमिहिर ने अपने बृहत्संहिता नामक ग्रन्थ में वास्तु का परिचय दिया है, जिस में देश का विशद् वर्णन किया है। वस्तुतः हम सभी जानते हैं कि यह भूमि हमारी माता है और हम सभी इसकी सन्तति है।[2] अतः हम कह सकते हैं कि यह भूमि ही हमारा आधार है। साथ ही यह भी सर्वविदित है कि अखिल ब्रह्माण्ड में पंचमहाभूतों की सत्ता सर्वत्र विद्यमान है इसलिए इन पंचमहाभूतों अर्थात् पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश के बिना इस सम्पूर्ण चराचर जगत की कल्पना करना भी असम्भव है।

1. शुक्रनीति 1/12,13
2. माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः, पृथिवी सूक्त श्लोक 12